अधिगम के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य (Theoritical Perspectives of -Learning)

अधिगम से सम्बन्धित सिद्धान्त

- व्यवहारवादी सिद्धान्त Behaviourist Theories
  - पावलव (Pavlov's
  - स्कीनर
- मानवतावादी सिद्धान्त Humanist Theories
  - मैस्लो
- संज्ञानवादी सिद्धान्त Cognitivist Theories
  - पियाजे
- सूचना-प्रक्रियात्मक मत सिद्धान्त Information-Processing view Theories
  - एटकिंसन
- सामाजिक सर्जनवादी दृष्टिकोण सिद्धान्त Social-Constructivist Theories
  - वाइगोत्सकी
  - बैण्डुरा

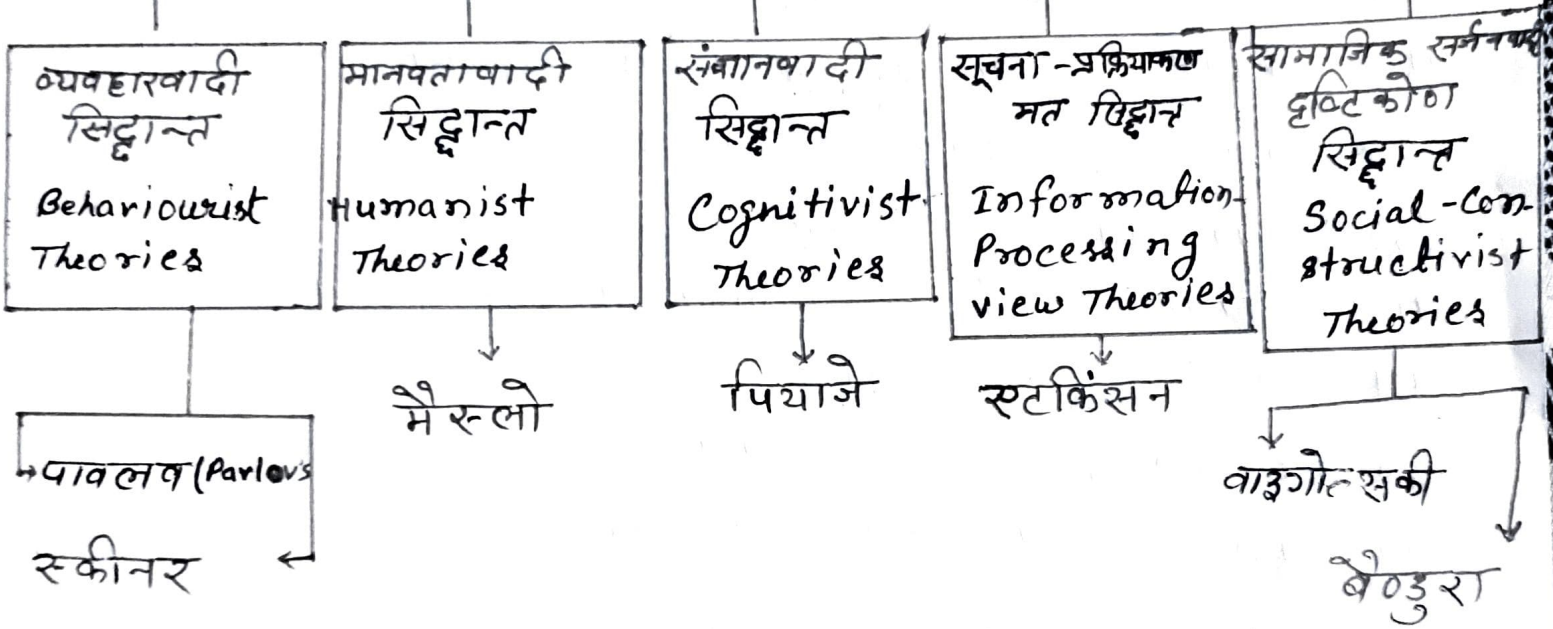

व्यवहारवादी सिद्धान्त
(Behaviourist Theories)

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Perspective) :-

बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक जे० बी० वाटसन ने 1913 ई० में मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहा। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने चेतन अनुभव की बहुत आलोचना की और उन्होंने केवल प्रत्यक्ष रूप से महसूस करने योग्य तथा मापने योग्य व्यवहार पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने मानव व्यवहार को समझने के साधन के रूप में पशु व्यवहार पर जोर दिया। वाटसन एवं उसके शिष्यों द्वारा प्रतिपादित व्यवहार-वादी विचार धारा ने मनोविज्ञान को भौतिकवादी यांत्रिक तथा वस्तुनिष्ठ रूप देकर एक नये युग का सूत्रपात किया। इस तरह मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान समझने से पूर्व संक्षेप में मनोविज्ञान के इतिहास को स्पष्ट करना आवश्यक है।

मनोविज्ञान :-

मनोविज्ञान के अध्ययन का प्रारम्भ दर्शनशास्त्र की शाखा के रूप में अनेक शताब्दियों पूर्व हुआ था। परन्तु आधुनिक काल में हुए परिवर्तनों के फलस्वरूप मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग कर लिया तथा अब इसे एक स्वतंत्र विषय के रूप में अध्ययन किया जाता है।

मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र से अलग होने के प्रयास में अनेक बार अपने अर्थ और विषय वस्तु में परिवर्तन किया। प्रारम्भ में प्लेटो, अरस्तु, डेकार्ट आदि यूनानी दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान के रूप में स्विकार किया है। इसके बाद हाब्स, लॉक, कांट, ह्यूम आदि दार्शनिकों ने मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया। तत्पश्चात वाइव, विलियम जेम्स, विलियम वुंट, जेम्स सली आदि विद्वानों ने मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा। आज मनोविज्ञान

मनोविज्ञान के अर्थ की इस यात्रा को वुडवर्थ ने निम्नलिखित शब्दों में अभिव्यक्त किया है —

"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का त्याग किया, फिर उसने अपने मन का त्याग किया, फिर इसने अपनी चेतना का त्याग किया, अब यह व्यवहार की विधी को स्वीकार करता है।"

— Woodworth

व्यवहारवादी सिद्धान्त मुख्य रूप से पुर्नबलन, अनुक्रिया, उद्दीपक और अनुबन्ध को महत्व देता है।

उद्दीपक (Stimulus) :-

वह वातावरणीय घटक जिसे प्राणि अपनी अनुक्रिया (की जाने वाली क्रिया) के द्वारा प्राप्त करना चाहता है उसे उद्दीपक कहते हैं।

अनुक्रिया (Response) :-

उद्दीपक के प्रति की जानें वाली क्रिया अनुक्रिया कहलाती है।

अनुबन्ध (Condition) :-

यदि प्राणि अनुक्रिया कर के उद्दीपक को प्राप्त कर लेता है तो इन दोनों के बीच एक सम्बन्ध बनता है। इसी सम्बन्ध को मनोविज्ञान की भाषा में अनुबन्ध कहते है और इसके बाद अधिगम होता है।

पुनर्बलन (Reinforcement) :-

वह क्रिया जो अनुक्रिया की संख्या में वृद्धि करता है, वह पुनर्बलन कहलाता है।

अभिप्रेरणा (Motivation) :-

अभिप्रेरणा एक ऐसी परिकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो प्राणि के व्यवहार के निर्धारण एवं संचालन से संबंध रखती है। यह एक ऐसी आंतरिक शक्ति होती है जो प्राणि को किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य करती है, जिसे अभिप्रेरण कहते हैं।

वस्तुनिष्ठ (Objective) :-

किसी परीक्षण को तभी वस्तुनिष्ठ परीक्षण कहा जाता है जब उस परीक्षण पर अंकन करते समय परीक्षण की व्यक्तिगत पसन्द या ना पसन्द का परीक्षण द्वारा प्राप्त अंको पर बिल्कुल भी प्रभाव नहीं पड़ता है।